रात्रि क्लास 7/7/68 :– यह नयनों से जो जल आता है याद में वह मोती बन जाती है। याद की यात्रा से बड़ी कमाई होती है। यह आँसू बहाना याद में सिर्फ पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होता है। अभी तो कुछ नहीं है आगे चल तुमको कशिश बहुत होगा। तुम माया पर जीत पहनते जावेंगे। तो खुशी में भी आँसू आवेंगी। जब बाप द्वारा तुम्हारी सुख की सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं। ऐसे नहीं कि यह(ल0ना0) एक दो को प्यार नहीं करते होंगे; परन्तु विकार का ख्याल कब नहीं होगा। देह–अभिमान में यहाँ है। रावण राज्य में हैं तो बाप प्यार भी नहीं करने देते हैं। नहीं तो गिर पड़ेंगे; क्योंकि रावण राज्य है ना। वहाँ तो अशुद्ध ख्यालात होती ही नहीं। इसलिए बच्चों को मेहनत करनी पड़ती है ऐसे बनने लिए। प्यार भी यहाँ छी छी है। जैसे आशुक–माशुक गाये हुए हैं। उनका शुद्ध प्यार था। खराब बात नहीं। इसलिए गाये जाते हैं। स्त्री–पुरुष का प्यार तो होता है; परन्तु वहाँ प्यार करने से गिरेंगे नहीं। यहाँ तो गिर पड़ते हैं। वह दुनिया ही निराली है। नाम ही है स्वर्ग। यह नर्क। वह रामराज्य यह रावण राज्य। अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग। तुम पद्मा–पद्मभाग्यशाली हो। जो बेहद के बाप के महावाक्य सुनते हो। बच्चों को मेहनत करनी पड़ती है। जोर दिया जाता है अपन को आत्मा समझो। देह के प्यार में न जाओ। वहाँ है पवित्र प्रवृत्ति मार्ग। कितना ऊँच पद। फिर अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग में देखो भारत का क्या हाल हुआ है। यह शाहुकारी भी अल्पकाल के लिए है। बाप कहते हैं यह मृत्युलोक बाकी थोड़ा टाइम है। तुम आज से 5000 वर्ष पहले सतयुग में थे। पुनर्जन्म लेते2 नीचे उतरते आये हो। झाड़ वृद्धि को पाता गया है। आत्माएँ ऊपर से आती रहती हैं। यह झाड़ आदि का किसको पता नहीं है। ऋषि–मुनि कुछ नहीं जानते। रावण राज्य है। तुम्हारे विकर्म विनाश हों इसलिए बाप मेहनत कराते रहते हैं। अपन को आत्मा समझो तो विकर्म विनाश हों। अपना चार्ट रखो कितना समय बाप को याद करते हो। आठ घंटा धोरी–धंधा, आठ घंटा आराम, आठ घंटा तो याद करना चाहिए। वही पद पा सकते हैं। अभी सृष्टि का ही अंत है।

इसलिए शरीर भी खुशी से छोड़ना है। घर तो खुशी से जाना चाहिए ना। ऐसे नहीं जीवघात करने से वापस जा सकते हैं। कुआँ में गिर गया, शुट कर दिया वह कोई वापस जा नहीं सकते। दुःख होती है जो कर दूसरा जन्म ले बालक बनेंगे। अभी तुमको बाप बेहद का ज्ञान सुनाते है। सुख भी बेहद का, नालेज भी बेहद की। बच्चे जानते है बेहद का मालिक ही बेहद का नालेज देते हैं। तुम बेहद सृष्टि के मालिक बन जाते हो। खुद कहते हैं मैं राजा–रानी नहीं बनता हूँ; तुमको राजाई देता हूँ मैं नहीं बनता। यह खेल है ना। है बेहद का खेल। अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो। दैवी गुण धारण करो। पूछते हैं खान–पान ऐसा मिलता है। न खावें तो नौकरी आदि छूट जावे। फिर युक्ति बताते हैं शिव बाबा को याद करो। याद के बल से इस आयरनएजेड पहाड़ को गोल्डेनएज बनाते हो। वहाँ सोने की खानियाँ भरपूर रहती है। हर चीज़ सहज मिल जाती है। तुम्हारी लाइफ(जीवन) भी सहज पास होते हैं। बीमारी आदि कुछ नहीं। बाप जानते हैं भक्तिमार्ग में बहुत धक्के खाये हैं। मेहनत की है भगवान से मिलने लिए। भगवान को जानते ही नहीं तो मिले कैसे। बाप कहते हैं मुझे ही आना पड़ता है। मुँझते हैं पता नहीं भगवान किस रूप में भी आ जावे। वास्तव में तुम यहाँ सुफ्टी में बैठो हो। यहाँ पाप आदि करने की दरकार नहीं रहती। प्यार से सभी को समझाते हैं। एक बाप सभी को दुख से छुड़ाकर शान्तिधाम–सुखधाम ले जाते हैं। इसलिए उस एक को भक्तिमार्ग में सभी याद करते हैं। एक ही बेहद का बाप है। तो उनसे बहुत दिल लगती है। वही इतना सुख देते हैं। ड्रामा अनुसार बांधा हुआ है। कृपा आशीर्वाद आदि नहीं करते। कहते हैं यह ड्रामा में नूँध है। मुझे पढ़ाना भी जरूर है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉगराफी भी समझानी है। तुम अधुरा पढ़ते हो। ऊपर चढ़ने का पाठ तो पढ़ते ही नहीं हो। नीचे उतरने का पाठ पढ़ते हो। यह नॉलेज अभी ही मिलती है। फिर कभी नहीं मिलेगी। जरा भी याद न रहेगा। इनको यह पता नहीं हक(है कि) हमने यह पद कैसे पाया। तुमको मालूम है। चक्र को भी तुम जानते हो। इसलिए तुम्हारा जन्म हीरे जैसा

है। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। आगे चलकर जब सतोप्रधान तक आवेंगे तब बहुत खुश होगा। रजो तमो में तुम्हारा खुशी कम होता है। अभी बाप कहते हैं फिर याद करो। संशय की बात नहीं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सभी पाप कट जावेंगे। यह गीता का युग है। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगमयुग पर ही आता हूँ। संगम का वृतान्त भी अभी का है। राजयोग सिखलाने बाप ही कहते हैं मैं कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। बाप की ग्लानी करते हो पत्थर–भित्तर में है तो गुप्त सजा भी मिल जाती(ी) है। जो पत्थर बुद्धि बन पड़ते हो। कुछ भी समझ नहीं है। कितनी ग्लानी करते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो इस ज्ञान के पहले हम बन्दर मिसल थे। बन्दर में विकार सबसे जास्ती होते हैं। अभी बाप कहते हैं बच्चे दैवीगुण धारण करो। पहले तो इस रथ को ही दैवीगुण धारण करना पड़े। सीखना पड़े। बाप कहते हैं कब किसको दुख न दो। मनसा, वाचा, कर्मणा किसको रिझाना नहीं है। जानते हो यह दुनिया ही खत्म हो जानी है। बच्चों को मेहनत करनी है बाप को याद करना है। 84 के चक्र को भी याद करना और दैवी गुण भी धारण करनी है। दैवी करैक्टर्स चाहिए था जरूर। सारी दुनिया में पीस–प्रास्पर्टी, प्युरिटी थी। देवता तो फिर क्या। कहा जाता है यह जैसे देवता है। देवता माना ही उनमें दैवीगुण होते हैं। अभी तुम मनुष्य से देवता बन रहे हो। ड्रामा अनुसार तुम पुरुषार्थ भी जरूर करेंगे। अच्छा बच्चों को गुडनाइट। रूहानी मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।